प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में प्रविधि की उपादेयता का अध्ययन

डा0 अच्युतानन्द शुक्ला

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य एवं संगठनात्मक पहलू पर अनेक विचारकों ने अपने अपने ढंग से विचार प्रस्तुत किये हैं किन्तु अभी तक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में ऐसी नूतन प्रविधियों का समावेश नही किया गया है जिससे यह कार्यकम प्रौढ़ों के लिए अधिक आकर्षक तथा शिक्षा की द्वष्टि से प्रभावशाली हो जाय। इस संदर्भ में प्रौढ़ शिक्षा की शिक्षण पद्वति पर विशेष घ्यान दिया जाना चाहिए। प्रौढों की शिक्षण पद्वति विशुद्ध शैक्षणिक न होकर प्रायोगिक होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवहार पक्ष में अपनी अनुभूति और अभ्यास से चलता है अनुभूति और अभ्यास की उत्पत्ति सामाजिक जीवन में स्वतंत्र प्रगतिशील, सक्रिय एवं आवृत्ति युक्त सहभागिता से होती हैं। जब व्यक्ति किन्हीं किन्हीं जीवन मूल्यों को सामाजिक संदर्भ में अपने लिए पाता हैं तब उसका सम्पूर्ण व्यवहार जाने अनजाने में उनके अनुसार चलने लगता है। हम प्रौढ़ शिक्षा द्वारा जिन जीवन मूल्यों को प्रौढ़ों में पैदा करना चाहते हैं उनके विषय में उनकी स्वानुभूति जगाये विना और उन्हें उस अनुभूति के अनुसार कार्य करने का अभ्यास कराये विना प्रौढ़ शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त करना सम्भव नहीं होगा। यह अनुभूति जागरण तथा कार्याभ्यास प्रायोगिक शिक्षा से ही हो सकता है केवल सैद्धान्तिक शिक्षा से नहीं। अतएव आवश्यक यह है कि प्रौढ शिक्षा कार्यकम में वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग किया जाय। इसी आधार पर शिक्षा क्षेत्र के विचारकों ने शैक्षिक प्रविधि को जन्म दिया और उन लोगों ने इसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि शिक्षण के क्षेत्र में शैक्षिक प्रविधि का उपयोग ही अच्छे छात्रों का निर्माण कर सकता है।

शैक्षिक प्रविधि के अन्तर्गत प्रयुक्त की गयी तकनीकियों से अधिगम शीघ्र, प्रभावशाली एवं स्थायी होता है। इस दृष्टि से इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रौढ शिक्षा कार्यकम को अधिक जागरूक, व्यापक एवं प्रभावशाली वनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन को चयनित किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. प्रौढ़ शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु शैक्षिक प्रविधि की विभिन्न तकनीकियों का पता लगाना।
2. प्रौढ़ शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु शैक्षिक प्रविधि द्वारा अनुमोदित विभिन्न उपकरणों की उपयोगिता के क्रम का पता लगाना।

---

*प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

शैक्षिक तकनीकी –

शैक्षिक तकनीकी में शिक्षण की वैज्ञानिक प्रक्रिया पर बल दिया जाता है। यह एक विधि है जो निरन्तर विकास शील एवं प्रभावकारी होती है तथा अधिगम की प्रक्रिया में कुशलता लाने में सदैव सक्रिय रहती है। निक्सन (1971) के अनुसार शैक्षिक प्रविधि व्यक्ति और समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का प्रायोगिक अध्ययन है। मिथेल (1973) के अनुसार शैक्षिक प्रविधि नयी प्रक्रियाओं एवं युक्तियों के प्रयोग द्वारा शैक्षिक नवीनता को लाने में सहायक हो सकती है।

अध्ययन विधि –

स्थान, व्यवसाय तथा वातावरण के भेद से शैक्षिक कार्यक्रमों में परिवर्तन होता रहता है। वही स्थिति प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में सम्भावित है। इस दृष्टि से वाराणसी जनपद के ही कतिपय विकास खण्डों को अध्ययन के लिए चुना गया।

शैक्षिक प्रविधि का क्षेत्र बहुत विशाल है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक प्रविधि के सभी अंगों पर विचार करना सम्भव प्रतीत नही हुआ इसलिए शैक्षिक प्रविधि के केवल उसी पक्ष को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जो प्रायोगिक दृष्टि से प्रौढ़शिक्षा के विकास में लाभदायक है जैसे शिक्षण की नयी युक्तियाँ, शिक्षा में नवीन वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग तथा शैक्षिक प्रविधि के उपकरणों के प्रयोग की सम्भावनाएँ।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श – यह अनुसंधान मुख्य रूप से गुणात्मक और मात्रात्मक आकड़ों से सम्बन्धित है। इसलिए इस शोध में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन को व्यापक एवं प्रतिनिधि स्वरूप देने के लिए सरकारी स्तर पर एक विकास खण्ड तथा दूसरा विश्वविद्यालयों द्वारा निर्दिष्ठ विकास खण्ड लिया गया। इस प्रकार अध्ययन के लिए दो विकास खण्डों का चयन किया गया –

1. काशी विद्यापीठ विकास खण्ड – हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा निर्दिष्ट
2. चहनियां विकास खण्ड – सरकारी स्तर पर निर्दिष्ट

दोनों विकास खण्डों में चल रहे केन्द्रों की संख्या इस प्रकार थी

तालिका 1– विकास खण्डों में केन्द्रो तथा प्रतिभागियों की संख्या का विवरण

विकास खण्ड	केन्द्र संख्या	प्रतिभागी संख्या
चहनियां	135	4000
काशी विद्यापीठ	90	2500
योग	225	6500

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दोनों विकास खण्डों के केन्द्रों की संख्या पर ध्यान न देते हुए दोनों से समान संख्या के प्रतिभागी चयनित किये गये जो दोनों विकास खण्डों के प्रतिभागियों की सम्पूर्ण संख्या के लगभग 33 प्रतिशत थे।

तालिका 2– न्यादर्श में लिये गये कुल प्रतिभागीयों की संख्या का विवरण

विकास खण्ड	केन्द्र संख्या	न्यादर्श संख्या
चहनियां	20	100
काशी विद्यापीठ	20	100
योग	40	200

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रौढ़ शिक्षा में शैक्षिक प्रविधि के योगदान की सम्भावना देखना है इसके लिए प्रत्येक विकास खण्ड से अधिकारियों की संख्या, अनुदेशकों का चयन लाटरी विधि से किया गया।

तालिका 3– विकास खण्ड में अधिकारियों एवं अनुदेशकों की संख्या का विवरण

विकास खण्ड	अधिकारी संख्या	अनुदेशाक संख्या
चहनियां	20	80 = 100
काशी विद्यापीठ	20	80 = 100

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के न्यादर्श लिये गये–

1. प्रतिभागी संख्या 200
2. अधिकारी एवं अनुदेशक वर्ग संख्या 200

उपकरण – शोध प्रबन्ध में अनुसूची का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संग्रह की विधि –

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रक्रिया पूरी करने के लिए दोनों विकास खण्डा) के उच्च प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों सम्पर्क किया गया। इस प्रकार प्रत्येक विकास खण्ड से 80 अनुदेशकों, 12 पर्यवेक्षकों, 8 अधिकारियों को सम्मिलित किया गया। इन अधिकारियों ने इस सूची के दूसरे खण्ड में दिये गये विभिन्न प्रविधि के अभिकरणों का अवलोकन कर अपनी सम्मति प्रकट की।

शैक्षिक प्रविधि के प्रकार – शिक्षा वैज्ञानिकों ने प्रौढ़शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक प्रविधियों को विशेष स्थान दिया है आज इस दिशा में जिन दो प्रविधियों का विशेष प्रयोग होता है वे हैं–

1. हार्डवेयर उपागम
2. साफ्टवेयर उपागम

हार्डवेयर उपागम में इन्जीनियरिंग के सिद्धान्तों का विशेष उपयोग होता है। साफ्टवेयर उपागम में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का विशेष ध्यान दिया जाता है।

शैक्षिक प्रविधि के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग तभी सम्भव है जबकि यह पता लग जाय कि क्षेत्रविशेष के प्रौढ़ शिक्षार्थियों की प्रौढ़ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कैसी है। इन्हीं उद्देश्यों को सम्मुख कर शैक्षिक प्रविधि से सम्बन्धित अनुसूची को दोनों विकास खण्डों में वितरित किया गया।

प्रत्येक विकास खण्ड प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की दिशा में निर्धारित किये गये 20 विभिन्न साफ्टवेयर उपकरणों के ऊपर 200 उत्तरदाताओं से (100–100) से मत प्राप्त किये गये और सम्पूर्ण में से 15 उपकरणों को विशिष्ट प्राथमिकता के क्रम में चुना गया। महत्व के आधार पर 15 उपकरणों को दोनों विकास खण्डों के लिए अलग–अलग प्राथमिकता के क्रम में चुना गया। दोनों विकास खण्डों से प्राप्त 15 प्रमुख उपकरणों में से 11 पर एकरूपता है शेष 4 उपकरणों के बारे में मत विभिन्नता है जिनमें एकरूपता है वे अग्रलिखित है–

तालिका 4 –प्राथमिकता के क्रम में प्रभावकारी उपकरण

चहनियां	काशी विद्यापीठ
1. चर्चा	1. चर्चा
2. पोस्टर	2. पोस्टर
3. कैलेण्डर	3. कैलेण्डर
4. चित्रमय पुस्तिका	4. चित्रमय पुस्तिका
5. पैम्फलेट	5. पैम्फलेट
6. कहानी	6. कहानी
7. डायलाग	7. डायलाग
8. नारे एवं सूक्तियां	8. नारे एवं सूक्तियां
9. बैठक, सम्मेलन, संगोष्ठी	9. बैठक, सम्मेलन, संगोष्ठी
10. पत्र पलिका	10. पत्र पलिका
11. सामाजिक सेवा के कार्यक्रम	11. सामाजिक सेवा के कार्यक्रम

तालिका में जिन 11 उपकरणों के क्रम के वारे में समानता आयी है वे वास्तव में बहुत ही प्रभावकारी एवं उपयुक्त हैं। साथ ही इससे यह भी पता चलता है कि ग्रामीण जन पुरानी परम्परा के अनुसार ही शिक्षा में अग्रसर होना चाहते हैं तथा शैक्षिक सुविधा की दृष्टि से उन उपकरणों की आपूर्ति एवं प्रयोग दोनों विकास खण्डों में समान है।

उपकरणों के प्राथमिकता के क्रम में जिन उपकरणों पर प्राथमिकता के क्रम के विषय में मत वैभिन्न है वे निम्नलिखित हैं।

तालिका 5 प्राथमिकता के क्रम में मत वैभिन्न वाले उपकरण

चहनियां	काशी विद्यापीठ
1. प्रदर्शन	1. कविता
2. खेलकूद	2. बुकलेट
3. बुकलेट	3. खेलकूद
4. कविता	4. प्रदर्शन

इस तालिका को देखने से यह पता चलता है कि चहनियां विकास खण्ड में दृश्य उपकरण प्रदर्शन एवं खेलकूद को अधिक महत्व दिया गया है जबकि काशी विद्यापीठ विकास खण्ड में प्रदर्शन और खेलकूद को कम महत्व दिया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि काशी विद्यापीठ विकास खण्ड नगर के विल्कुल समीप है तथा यहाँ पर खेलकूद एवं प्रदर्शन आये दिन होते ही रहते हैं एवं यहाँ के प्रौढ़ उपकरणों से भलीभॉति परिचित हैं तथा चहनियाँ विकास खण्ड नगर से दूर है वहां के लोगों के लिए प्रदर्शन एवं खेलकूद एक नयी विधि है इसलिए इसको अधिक महत्व दिया गया है।

इस प्रकार अध्ययन से यह पता चलता है कि ग्रामीण प्रौढ़ साफ्टवेयर उपागम के विभिन्न उपकरणों की उपयोगिता से परिचित हैं पर इन उपकरणों द्वारा लाभ उठाने का उन्हें कम अवसर मिलता है। ऐसी स्थितियों में प्रौढ़ शिक्षा कर्मियों का यह कर्तव्य है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में साफ्टवेयर उपागम का अधिक से अधिक प्रभावी ढंग से कार्यान्वयन करें।

हार्डवेयर के विषय में 16 उपकरण रखे गये थे जिनमें दोनों विकास खण्डों के लिए 10–10 प्रभावकारी उपकरणों की सूची बनायी गयी जो निम्मलिखित तालिका में प्रदर्शित की गयी है–

तालिका 6 प्राथमिकता के क्रम में प्रभावकारी उपसूत्रों का विवरण

चहनियां	काशी विद्यापीठ
1. रेडियो	1. रेडियो
2. टेप रिकार्डर	2. टेपरिकार्डर
3. चलचित्र	3. चलचित्र
4. कैमरा	4. कैमरा
5. मानचित्र	5. मानचित्र
6. ग्लोब	6. ग्लोब
7. डायग्राम	7. डायग्राम
8. फोनोग्राफ	8. फोनोग्राफ
9 ध्वनि चलचित्र	9 ध्वनि चलचित्र
10. दूरदर्शन	10. दूरदर्शन

उपर्युक्त दोनों विकास खण्डों में प्राथमिकता के क्रम में क्रमांक 6 तक उपकरण समान है। इसका कारण है कि अधिकांश उपकरण प्रत्येक व्यक्ति से परिचित से लगते हैं एवं

दोनों विकास खण्डों में इनकी आपूर्ति एवं उपयोग समान है। भिन्नता का कारण यह है कि काशी विद्यापीठ विकास खण्ड में विद्युत आपूर्ति, भौतिक साधन की उपलब्धता, यातायात, संचार प्रगति आदि अधिक मात्रा में हुई है और यह नगर के निकट स्थित है किन्तु चहनियां विकास खण्ड में इन साधनों की प्रगति कम है। यही कारण है कि आधुनिक युग का सर्वाधिक सशक्त उपकरण दूरदर्शन को चहनियां विकास खण्ड में सबसे पीछे रखा गया है।

प्रौढ़ों के सम्बन्ध में शोध प्रबन्ध से जो परिणाम निकाला गया है उससे यह पता चलता है कि प्रारम्भ मे प्रौढ़ हार्डवेयर उपागम से अधिक आकर्षित होते हैं हार्डवेयर उपागम के तकनीकी सिद्धान्तों को वे भले ही न समझ पावें किन्तु प्रौढ़ शिक्षा में निहित मूलभूत वातों का ज्ञान हार्डवेयर उपागम से उन्हें शीघ्र हो जाता है। इस उपागम में दूरदर्शन, रेडियो, ग्रामोफोन, टीचिंग मशीन, चलचित्र एवं कम्प्यूटर का उपयोग भली भाँति किया जा सकता है पर इसके लिए आवश्यक यह है कि प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में कार्यरत पर्यवेक्षक एवं अनुदेशक हार्डवेयर उपागम के प्रयोग में कुशल हो। शैक्षिक प्रविधि का प्रयोग इस दृष्टि से युक्ति युक्त है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जनतंत्रात्मक विचार और आज की आवश्यकताओं की पूर्ति तभी सम्भव है जबकि हम शिक्षण विधियों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सके।

उचित संसाधनों के प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि प्रौढ़शिक्षा कर्मियों एवं शिक्षित किये जा रहे प्रौढ़ों दोनों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो तथा वे अपनी एवं समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वैज्ञानिक साधनों द्वारा कम समय एवं कम खर्च में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में शैक्षिक प्रविधि के उपयोग का वास्तविक उद्देश्य यही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- प्रौढ़ शिक्षा विशेषांक,(1978) साहित्य परिचय विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 1978, 79।
- अनुदेशक प्रशिक्षण संदर्शिका (1984)– प्रौढ़ तथा सतत शिक्षा केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,
- शर्मा आर0ए0 (1980) – शिक्षण तकनीकी माडर्न पब्लिशर्स 729 बी0एल शर्मा रोड मेरठ तृतीय संस्करण, ।
- ब्रैक्ट्स आर (1962) – दी टेक्नीक्स ऑफ टेलीविजन प्रोडक्शन न्यू यार्क मैक ग्रा हिल।